

श्रीवालकृष्णः प्रभुर्विजयतेरताम्

श्रीमद्भूलभविद्वनेशौ विजयते

Namo Vṛkṣebhyah

Vṛkṣāropaṇa Mahotsava

19 - 22 March, 2026

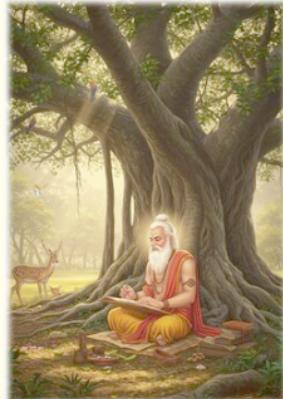


नमो वृक्षेभ्यः

वृक्षारोपण महोत्सव

१९ - २२ मार्च, २०२६

पृथ्वी के प्रारम्भ से, मानवजाति में प्राणसञ्चार होने से भी पहले, वृक्ष अपनी सत्ता दृढ़ कर चुके थे। कहा जाता है हमारी संस्कृति का विकास वृक्ष की छाँव में हुआ है। जीवन का पोषण करते हुए, छाया प्रदान करते हुए, और ज्ञान की प्रेरणा देते हुए, वृक्षों के आश्रय ही हमारी संस्कृति का विकास हुआ। वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत और अनेक अन्य महाकाव्य महर्पियों द्वारा वृक्षों की छाया में प्रकट हुए, हमें याद दिलाते हुए कि वृक्ष हमेशा से ज्ञान और सभ्यता की यात्रा में हमारे नित्य सहचारी रहे हैं।



वृक्षारोपण और पालन-पोषण का शास्त्रों में महत्व

ऋग्वेद (१०.१०१.११)

वनस्पतिं वन आस्थापयद्धं नि षू दधिष्वम् अखनन्त उत्सम् ॥
वन में वृक्ष को स्थापित करो और उसे जलाशय के पास सुदृढ़ करो।

बृहदारण्यक उपनिषद् (३.९.२७)

यथा वृक्षो वनस्पतिस्थैव पुरुषोऽमृषा।

पुरुष (भगवान्) वृक्षरूप हैं, जिनका सद्विग्रह वनस्पति है।

श्वेताश्वतर उपनिषद् (३.९)

वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्

पुरुष आकाश में वृक्ष के समान दृढ़ रहते हुए भी, सम्पूर्ण जगत को व्याप करते हैं।

सुबोधिनीजी (१०.२.२७)

इति श्रुतेर्भगवान् वृक्षरूपः

श्रुति कहती है: भगवान स्वयं वृक्ष स्वरूप में विद्यमान हैं।

वाल्मीकि रामायण (६.२७.३६)

सर्वकामफला वृक्षः

वृक्ष सभी कामनाओं के पूरक होते हैं।

भगवद्गीता (१०.२६)

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्

सभी वृक्षों में, मैं अश्वत्थ (पीपल) हूँ।

मत्स्य पुराण (१५४.५१३)

दशपुत्रसमो ह्रुमः

एक वृक्ष दस पुत्रों के समान होता है।

शिवपुराण वृक्षारोपण को बढ़ावा देने में अग्रणी बनकर उन्हें पुत्र का स्थान प्रदान करता है। यह वृक्षों के लाभों पर प्रकाश करते हुए कहता है कि वृक्ष देवताओं को पुष्पों से प्रसन्न करते हैं, पितरों को फलों से, और यात्रियों को अपनी छाया से। यह ग्रन्थ आध्यात्मिक लाभों की भी पुष्टि करता है: जो लोग पुष्प उद्यान लगाते हैं, उनके बारे में कहा जाता है कि वे **पुष्पक विमान** में यात्रा करते हैं, और यम के लोक में भी, ऐसे व्यक्ति चिलचिलाती धूप से सुरक्षित रहते हैं।

जैसा कि **उमा संहिता** (११.७) इस प्रकार भार देती है—

कान्तारे वृक्षरोपी यस्तस्माद् वृक्षांस्तु रोपयेत्। अतीतानागतान् सर्वान् पितृं वंशांस्तु तारयेत्॥
“जो निर्जन भूमियों में वृक्ष लगाता है, वह अपने समस्त अतीत और अनागत पितरों को तार देता है।”

अतः वृक्षारोपण और उनका पालन-पोषण न केवल समाज व पर्यावरण की सेवा है, बल्कि एक पवित्र भेट भी है — एक ऐसा कार्य जो पीड़ियों के लिए आशीर्वाद सुनिश्चित करता है, दिव्यता का सम्मान करता है, और धर्म की पवित्र मिट्टी में एक शाश्वत पदचिह्न छोड़ता है।

वटमूले स्थितो ब्रह्मा, वटमध्ये जनार्दनः।
वटाये तु शिवो देवः सावित्री वटसंश्रिता॥

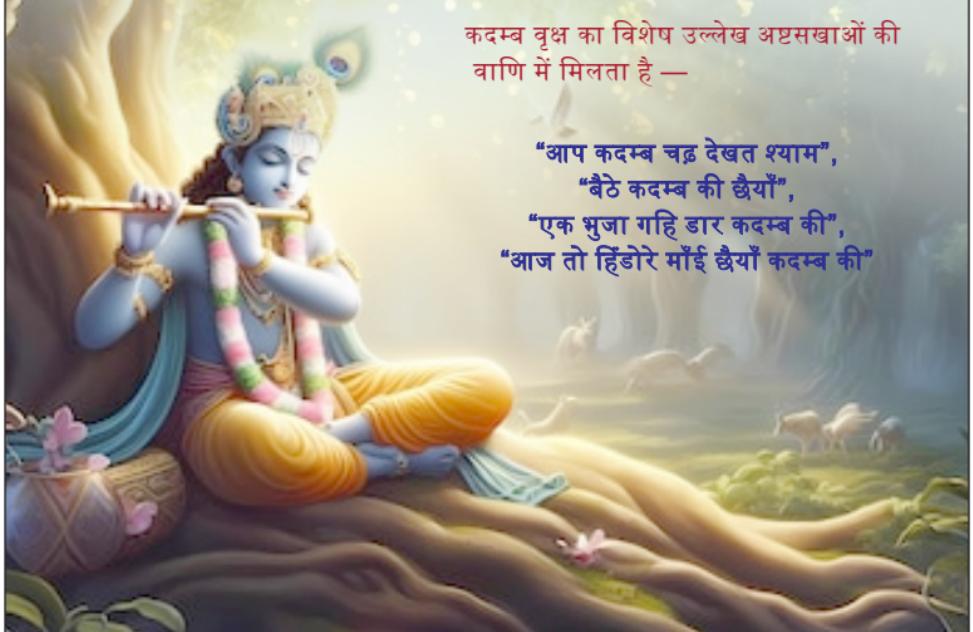
वटवृक्ष की जड़ में **ब्रह्मा** निवास करते हैं,
उसके मध्य में **जनार्दन** (विष्णु) स्थित हैं;
उसके शीर्ष पर भगवान् **शिव** हैं, और
देवी **सावित्री** उसी वटवृक्ष में निवास करती हैं।



भविष्य पुराण कहता है कि वृक्षारोपण दान का सर्वोच्च रूप है, और जो व्यक्ति वृक्ष रोपता है, वह उच्च लोकों में भी पुण्य प्राप्त करता है।

कदम्ब वृक्ष का विशेष उल्लेख अष्टसखाओं की वाणि में मिलता है —

“आप कदम्ब चढ़ देखत श्याम”,
“बैठे कदम्ब की छैयाँ”,
“एक भुजा गहि डार कदम्ब की”,
“आज तो हिंडोरे माँई छैयाँ कदम्ब की”



नमो वृक्षेभ्यः एक वृक्षारोपण अभियान है,
जो गीत सङ्गीत सागर द्रस्ट द्वारा

पूज्य गोस्वामी श्रीप्रशान्तकुमारजी महाराज और
पूज्य गोस्वामी श्रीपूर्णनिन्दजी (वृहन्मन्दिर-मुम्बई)
के शुभ एवं प्रेरणादायी मार्गदर्शन में प्रारम्भ किया गया है।



गीत सङ्गीत सागर द्रस्ट

श्री गिरिराजजी की पवित्र तरहेटी में,
जो कि श्रीकृष्ण की सबसे प्रिय क्रीडास्थली है,
१९ - २२ मार्च, २०२६
को वृक्षारोपण महोत्सव का आयोजन कर रहा है।

पूज्य महाराजश्री ने १०८ वृक्ष रोपने की योजना की है, जिसमें प्रत्येक वृक्ष का नाम
श्रीगुरुआईगंगजी के १०८ दिव्य नामों के अनुरूप होगा। यह वृक्षारोपण अभियान

क्लीन तरहेटी ग्रीन तरहेटी मिशन

के अन्तर्गत है।



श्रीगिरिराजजी की पवित्र तरहेटी में वृक्षारोपण करना वास्तव में
हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य है।



कौन जाने - स्वयं श्रीकृष्ण एक दिन आपके वृक्ष की
छाया में विश्राम करें,

या शायद अपनी चरती गायों की देखभाल के लिए
उसकी शाखाओं पर चढ़ जाएँ।



ब्रज की दिव्य भूमि में वृक्ष लगाने से मिलने वाले आनन्द और
तृप्ति की बराबरी कोई धन-संपत्ति नहीं कर सकती।

आपको इस दिव्य अभियान में भाग लेने हेतु हृदय से आमन्त्रित किया जाता है। न केवल अपने हाथों से वृक्ष रोपकर, अपितु उसे बढ़ाते हुए देखने के लिए गोद लेकर, स्वयं को धन्य मानें।

हम हृदय से अनुरोध करते हैं कि आप इस संदेश को अपने साथी वैष्णवों, परिवार और मित्रों के बीच प्रसारित करें और उन्हें हमारे **क्लीन तरहेटी ग्रीन तरहेटी मिशन** में शामिल होने के लिए प्रेरित करें।

कृपया दिए गए संकेत (लिंक) का उपयोग करके वृक्षारोपण और गोद लेने की प्रक्रिया के विषय दिए गये विवरण को पढ़ें। <https://namovrksebhyah.org/>

हम इस दिव्य सेवा में आपकी उत्साहपूर्ण भागीदारी की अपेक्षा रखते हैं, क्योंकि हम सब मिलकर श्रीगिरिराजजी की पावन तरहेटी को स्वच्छ और हरा-भरा करने में निमित्त बनेंगे।

गीत सङ्गीत सागर ट्रस्ट

ट्रस्टीगण

निलेश मोदी

सेश्वल झवेरी

चिन्तन शाह

*विशेष जानकारी प्राप्त करने हेतु, सम्पर्क करें—

श्रीमती दीपा सम्पट - 98210 21315 (सायं ४ बजे के बाद)

श्रीआनन्द ठक्कर - 99309 24070

ई-मेल: 95gsst@gmail.com

मुख्य अतिथि
श्रीलोकेशजी गर्ग
(समृद्धि ज्वेलर्स-मथुरा)

संरक्षक

श्रीराजूभाई व्हावी• श्रीअजय गान्धी• श्रीप्रदीप गान्धी• श्रीमती वर्षाविन जि. शाह (जालीवाला)

श्रीराजेश ब्रिजलाल वसानी• श्रीआनन्द ठक्कर• श्रीसमीर ठक्कर• श्रीपराग मेहता

